आत्मन के रोजर्स ने दो उपतंत्र बताए हैं -
(a) आत्म संप्रत्यय - इससे तात्पर्य व्यक्ति के इन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है जिससे व्यक्ति अवगत होता है। हालांकि यह प्रत्यक्षण हमेशा सही नहीं होती जो अनुभूतियाँ व्यक्ति के आत्म संप्रत्यय के साथ असंगत होती हैं, उसे व्यक्ति स्वीकार नहीं करता है। और यदि स्वीकार करता भी है तो विकृत रूप में।
(b) आदर्श आत्मन - इसका अभिप्राय स्वयं के बारे में विकसित ऐसी छवि से होता है जिसे व्यक्ति आदर्श मानता है। अर्थात आत्मन में प्रायः वे गुण होते हैं जो वांछनीय होते हैं। रोजर्स के अनुसार एक सामान्य व्यक्तित्व में आदर्श आत्मन एवं प्रत्यक्षीकृत आत्मन में अंतर नहीं होता परंतु जब इन दोनों में अंतर होता है तो अस्वस्थ व्यक्तित्व का विकास होता है।

व्यक्तित्व की आवश्यकताएँ -
रोजर्स का मत है कि व्यक्तित्व की दो मूल्य आवश्यकताएँ होती हैं जिनसे उसका व्यवहार लक्ष्य की ओर निर्देशित होता है।

PSY (H)
Paper - II

कार्ल रोजर्स का व्यक्तित्व सिद्धांत

कार्ल रोजर्स मनोविज्ञान के मानवतावादी विचारधारा से संबंध रखते हैं। अब्राहम मास्लो के साथ साथ रोजर्स ने भी इस विचारधारा को बलवती करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रोजर्स द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व सिद्धांत को आत्म सिद्धांत या व्यक्ति - केन्द्रित सिद्धांत कहा जाता है।

रोजर्स के सिद्धांत में व्यक्तित्व के निम्न दो पहलुओं पर विशेष बल डाला गया है।

प्राणी → रोजर्स के अनुसार प्राणी एक दैहिक जीव है जो शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही तरह से कार्य करता है। इसमें प्रासंगिक क्षेत्र एवं आत्मन दोनों सम्मिलित होते हैं। रोजर्स के अनुसार सभी तरह की चेतन एवं अचेतन अनुभूतियों के योग से जिस क्षेत्र का निर्माण होता है, उसे प्रासंगिक क्षेत्र कहते हैं। मानव व्यवहार इसी के कारण होता है। प्रासंगिक क्षेत्र के बारे में स्वयं व्यक्ति ही सही सही जानता है।

आत्मन → अनुभव के आधार पर धीरे-धीरे प्रासंगिक क्षेत्र का एक भाग विशिष्ट हो जाता है। इसे रोजर्स ने आत्मन की संज्ञा दी है। इसका विकास शैशवावस्था में होता है